Hkkjr dh dE;qfuLV ikVhZ ¼ekvksoknh½
dsUnzh; desVh

izsl foKfIr

iqfyl o v/kZlSfud cyksa ls gekjk vuqjks/k!
yqVsjksa ds fy, viuh tku nkao ij er yxkb;s!
vkijs'ku xzhu g.V dk fgLlk er cfu;s!
turk dh tku cpkb;s!

पुलिस व अर्ध्दसैनिक बलों के जवानों! आप जरा सोचिये। आपके पारिवारिक पृष्ठभूमि को याद कीजिये। खाकी वर्दी पहने, कंधे पर बंदूक उठाने के बावजूद समाज की निचली सीढ़ी के सैनिक पेशे में हो। आप सब दलित, आदिवासी, गरीब कामगार व किसान परिवारों जन्मे हो। राज्य बल में हो या चाहे खूंखार कमांडो, अर्ध्द सैनिक बल हो या सेना जहॉ कही भी नौकरी कर रहे होगे लेकिन आप लोग जिंदगी में आखिर क्या हासिल करना चाहते हो? ईमानदारी से अपना मन को टटोलकर देखिये। आपकी सेवाएँ किनको फायदा पहुंचा रही हैं, इसे आप बखूबी जानते हो। हम भी जानते हैं पुलिस बनना आपको कदापि पसंद नहीं है। हमारे संघर्षरत इलाकों में आपकी तैनाती पर आपके परिवार वाले कितने तनावग्रस्त हैं? क्या आप इसे नकार सकते हो! कुछ लंपट ताकतों को छोड़कर कोई भी ईमानदार शख्स पुलिस नौकरी करना नहीं चाहता है। इन इलाकों में तैनात पुलिस कर्मियों में से एक तिहाई कर्मचारी ड्यूटी में जाइन नहीं कर रहे हैं। आपके आला अधिकारी व मंत्रीगण द्वारा अल्टीमेटम देने के बावजूद यह संख्या बढती जा रही है। इसलिए हम कह रहे हैं – 'पुलिस जवानों! आप भी गरीब हो!' हमारी पार्टी आप सबको आह्वान दे रही है कि आप सब गरीब जनता के न्यायपूर्ण संघर्ष का हिस्सा बनकर शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो जाइये। विशाल जन समुदायों का पक्ष लेकर निस्वार्थ व समर्पित भावना से लड़नेवाली हमारी जन मुक्ति छापामार सेना का आदर्श को अपनाइये।

आपके आला अधिकारी व भ्रष्ट मंत्री मीठी चुपड़ी बातों से झूठी देशभक्ति को आपके दिमागों में ठूंस रहे हैं। 'माओवाद देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा'कहते हुए खूब प्रचार कर रहे हैं। माओवादियों पर आतंकवादी, देशद्रोही तथा समाजविरोधी का ठप्पा लगाते हुए हमारे खिलाफ आपके दिमाग में जहर भर रहे हैं। इस देश में अपना न्यायपूर्ण मांगों के लिए लड़नेवाले अलग–अलग तबकों पर निर्ममतापूर्ण दमन चलाने आपके आला अफसर व लंपट मंत्रीगण उकसा रहे हैं। कश्मीर की लड़ाकू जनता को पाकिस्तान प्रायोजित ताकतों के रूप में दर्शाते हुए आपके नस नस में द्वेष भर रहे हैं। पूर्वोत्तर भारत की राष्ट्रीयताओं के बारे में भी यही सोच है। लेकिन एक बार सोचिये। कई दशकों से सशस्त्र बल विशेष अधिकार कानून के तहत भारत सेना द्वारा हत्याएँ, लैंगिक अत्याचार, दमन व उत्पीड़न चलाने के बावजूद उन राष्ट्रीयताओं की जनता अपनी खून बहाते हुए प्रतिरोध जारी रखी हुई हैं। उनकी आकांक्षाएं उन्हें लड़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं। उसी प्रकार 1967 का नक्सलबाड़ी के संघर्ष के समय से आज तक हमारे देश में 'जमीन जोतनेवालों को'नारे की स्फूर्ति से जमीन के लिए लड़ते हुए 15 हजार लोगों ने अपनी जान की कुरबानी की। आप इस बात का ख्याल रखिये कि इनमें अधिकांश आदिवासी, दलित व गरीब किसान ही हैं। लालगढ़ से लेकर सूर्जागढ तक विशाल मैदानी व जंगली इलाकों में जारी क्रांतिकारी जन आंदोलनों को कुचलने 1970 से शुरू आपरेशन 'स्टेपुलचेज' से लेकर पिछले 6 सालों से जारी 'आपरेशन ग्रीन हंट' तक न जाने कितने अभियान व महा अभियान चलाकर कितना खून खराबा किया, इसकी जमीनी सच्चाई आप ही बता सकते हो। जनता की जायज मांगों के लिए अपनी जान कुरबान करनेवालों में आपके भाई–बंधु जरूर होंगे। इस खून खराबे के पीछे छुपे लुटेरे वर्गों के स्वार्थ व सत्ता की लालच को आप पहचानने से खाकी बलों में भर्ती होने का निर्णय नहीं लोगे। खाकी बलों में भर्ती से हुई अपनी चूक को आप जरूर पहचानेंगे।

आप इस देश में किसकी सेवा के लिए अपने आप को अर्पित किये हो क्या आप कभी ठंडे दिमाग से सोचे हो! भ्रष्टाचार के घोटालों में गले तक डूबे राजनीतिक नेताओं, उनके आका आला अफसरों, अपराध चरित्र वालों को आप सलाम करते हुए गुलामी की जिंदगी जी रहे हो। कल तक प्रधानमंत्री रहे मनमोहन सिंह पर कोयला आबंटन घोटाले का आरोप लगे

हैं। केन्द्र में मंत्री पद संभाले ए. राजा, सुरेश कलमाडी सहित अनेक मंत्रिगण, मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, मधु कोडा, यदियुरप्पा जैसे दिग्गजों तथा कनीमोळी जैसी सांसदों को आप बचाना है। वर्ष 2002 में गुजरात में भीषण नरसंहार चलाकर 3 हजार से ज्यादा आम नागरिकों को बंदूकों का निशाना बनाकर लाखों जनता को पलायन पर मजबूर करने वाला देश का मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कितना शालीन हंतक है – आप जरा सोचिये। 'मेक इन इंडिया' चिल्लाते हुए मोदी देश विदेशों का दौरा करते हुए अपने देश के संसाधनों को विश्व बाजार में नीलामी लगाने लगा है। 'विकास का उसका रट असल में बड़े कारपोरेट घरानों का विकास ही है। देश के गरीब वासियों के उत्थान के नाम पर घड़ियाली आंसू बहाते हुए मनगढ़त कहानियॉ सुनवाता रहता है। यही कारण है कि अमेरिका अध्यक्ष बराक ओबामा, कनाडा के प्रधान मंत्री स्टीफन हार्पर, फ्रान्स के अध्यक्ष फ्रांकोईस होलाण्डे, जर्मनी की अध्यक्षा एंजेला मेर्किल जैसे साम्राज्यवादी नेता उसकी खूब तारीफ करने लगे हैं। उन्हें संकट के दलदल से उबारने के लिए लाखों करोड़ों डालर हमारे देश में पूंजी निवेश कराना ही 'मेक इन इंडिया' का असली मकसद है। 'मेक इन इंडिया', स्मार्ट सिटी, जनधन जैसी तमाम योजनाएं वित्तीय संकट में चटपटाती साम्राज्यवादी देशों का हित पूरा करने के लिए ही है, हमारे देश में 65 प्रतिशत नौजवान पीढी को गुलाम बनाना ही मेक इन इंडिया का असली मकसद है। इस परिप्रेक्ष्य में आपकी सेवाएं भी उनके लिए समर्पित होंगे। आपकी बंदूकें किसानों की उर्वरित जमीनों को उनके हवाले करने के लिए ही है। आप बेशर्मी से उन्हें तमाम सेवाएं मुहैया कराना होगा। क्या उसके लिए आप तैयार रहोगे? आप जरा सोचिये।

देश के प्रधान मंत्री मोदी की मातृसंस्था हिन्दू धार्मिक कट्टरपंथी संघ गिरोह पहले से कहीं ज्यादा आदिवासियों, दलितों, अनेक अल्प संख्यक धर्मों के लिए खतरा बना हुआ है। 70 साल की बुजुर्ग ईसाई नन (सन्यासिन) पर लैंगिक अत्याचार करना, मदर थेरिस्सा का अपमान करना, ईसाई गिरिजाघरों को गिराना, विशेषकर गोमांस पर पाबंदी के द्वारा निचली जातियों व श्रम जीवियों की खानपान की आदतों पर प्रतिबंध लगाते हुए उन्हें अपमानित करना, मुसलमानों की कई तरीकों से अवहेलना करते हुए उन पर भौतिक हमले करना इत्यादि का आप चश्मदीद गवाह हो। ऐसे कमीनों की सेवा करना कदापि उचित नहीं होगा। मानवीय रिश्तों व सामाजिक बंधनों को धार्मिक कट्टरता से छिन्न भिन्न करने की चर्याओं का आप कड़ा विरोध कीजिए। अरसे से अफ्रिकी काले लोगों को अमेरिका अपना श्वेत दुरहंकार से नित्य अपमानित कर रहा है, हत्याएं करवा रहा है, न्याय से वंचित कर रहा है, दोयम दर्जे के नागरिक जैसे बरताव कर रहे है – इन सबसे आप वाकिफ ही है। यूरोप में भी मोदी जैसे कट्टर दक्षिणपंथी ताकतें फ्रांस व कनाडा में सत्ता चला रही है। हमारे देश सहित सारी दुनिया उथल–पुथल हो रहा है। ऐसे में आप लोग खाकी जिंदगी के बजाय जनता के साथ मिल जुलकर स्वतंत्र जिंदगी बिताना बेहतर होगा – इसे पहचानिये।

ifyl tokuk! v/n lfud cyk d tokuk!

शासक वर्गों द्वारा ऑपरेशन ग्रीन हंट शुरू करने के पिछले 6 सालों के दरम्यान माओवादी छापामारों के हमले में लगभग 400 केन्द्र अर्ध्द सैनिक बल के जवानों की मौत होने की पुष्ठि आपके डीजीपी प्रकाशसिंह जैसे आला अधिकारी कर रहे हैं। बीएसएफ के भूतपूर्व डीजी प्रकाश सिंह का कहना है कि एमपीवी आपकी सुरक्षा देने के बजाय बड़े पैमाने पर मौत खाई में ढकेल रहे है। विश्लेषकों का अनुमान है कि ग्रीन हंट के शुरू होने के दो सालों में 50 हजार से ज्यादा पुलिस जवानों ने अपनी नौकरी छोड़ दी है। वर्ष 2013 में 4,186 और वर्ष 2014 में 6,700 जवानों ने अपनी नौकरियां छोड़ दी है। खुदखुशी, एक दूसरे को गोली मारना, जुल्मी व उत्पीड़क अफसरों पर गोली चलाने जैसे तमाम घटनाओं को देखने से आप कितने मानसिक तनाव में काम कर रहे हो, इसका अनुमान लगा सकते है। आप अत्यंत मानसिक दबाव की स्थिति में काम कर रहे हो, ऐसी हत्याओं एवं आत्महत्याओं के अलावा बीमारियों से मरने वालों की संख्या कई गुना ज्यादा है। आप अपने आला अफसरों के घोर उपेक्षा के शिकार हो रहे हो। क्या वे आपको इन्सान के रूप में पहचानते है? आपकी दर्दभरी जिंदगियों की विषमताओं के बारे में समाचार माध्यमों में पत्रकारों द्वारा प्रकाशित कथनों से अवगत हो जाइये। आपके शिविरों में प्रसाध नों के अभाव में आप रोज कितने परेशान हो रहे हो, इसके बारे में सोचिये। आपकी ऐसी दयनीय हालात का जिम्मेदार कौन है। ऐसी निकृष्ट जिंदगी क्यों बिताना है? धोखेबाज आला अफसरों व लम्पट राजनीतिक नेताओं के धोखेबाजी का शिकार और कितना दिन तक होते रहोगे। नहीं, कदापि नहीं। आपके बाल बच्चों व माता–पिता से कोसों दूर अकेले में गुजारने वाली गमगीन जिंदगी को अलविदा कहिये। आपके घर में शादी का समारोह हो, मृत्यु का शोक हो, त्यौहार हो ऐसे मौकों पर दोस्तों और सगा संबंधियों से बिताने का आपका मन कितना ललायित हो रहा होगा, आपकी घृणित जिंदगियों की कडुवी यादें ही बतायेंगे। इस असहाय व हीन नौकरियों को छोड़ दीजिये। आप भी क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो जाइये।

जमीन के लिए संघर्षरत किसान भाइयों के साथ कंधे से कंधा मिलाइये। आंदोलनरत कामगारों से एकजुट हो जाइये। महंगाई के खिलाफ आवाज उठाने वाली विशाल जन समूहों के साथ जुड़ जाइये। महिलाओं पर लैंगिक शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ कमर कसने वाले महिलाओं का पक्ष लीजिए और उनका न्यायपूर्ण मांगों के प्रति हमदर्दी जताइये। इस देश में अकेले आप लोगों को छोड़कर बाकी हर जगह हर कोई संघर्ष के राह पर उठ खड़े हैं। नरेंद्र मोदी, अमित शा, मोहन

भागवत के षडयंत्रों व साजिशों का बलि का बकरा मत बनिये। मोदी के लुभावने भाषण, आप पार्टी के आकर्षणीय सुधारों के जाल में मत फंसिये। लानतभरी खाकी जिंदगी को दुतकारिये, जंग ए मैदान में उतरकर जन आंदोलनों में शामिल हो जाइये। हमारी क्रांतिकारी आंदोलन का गहराई से अध्ययन कीजिये। हमारी पीएलजीए का आदर्श अपनाकर जनता की सेवा कीजिये। जनता हमें प्यार कर रही है। आपको घृणा कर रही है। हमारे छापामारों को अपनी आंख की पुतली के समान बचा रही है। हमारी शहादत पर दो बूंद आंसू बहा रही है। लेकिन आपकी मृत्यु पंख से भी हल्की हो गई। यही कारण है कि ये सरकारें आपके लाशों पर करोड़ों रुपयां उंडेल रही है। मगर आप इन पैसों के लालच में मत पड़िये। रिवार्डों के चक्कर में फर्जी मुठभेड़ों के दौड़ में होड़ मत लगाइये। हाल ही में छत्तीसगढ़ राज्य नारायणपुर तहसील के एक पुलिस जवान मिच्चा वेडदा अपनी बीबी व बच्चों के साथ अपने जन्म गांव पहुंचा, जनता के सामने अपनी आपबीती सुनाई और जनता के बीच जीने के लिए मौका मांगा। अपनी पुलिस नौकरी को लात मार दिया। यह मात्र एक उदाहरण ही है। पूर्व में कइयों एसपीओ अपनी बंदूकों के साथ जनता के सामने आत्मसमर्पण करने की बात आप तो जानते ही हो न! जनता कई सालों से अपना मकान व जमीन को बचाते हुए विस्थापन विरोधी आंदोलनों में दृढ़ता के साथ खड़े होकर आंदोलन कर रही है। अपना अस्तित्व को बचा रही है। अपना स्वाभिमान को बचा रही हैं। उनके साथ मिलकर आप ' जल–जंगल–जमीन–इज्जत व अधिकार का नारा बुलंद कीजिये।

आपरेशन ग्रीन हंट और दूसरा नहीं जनता पर छेड़ा गया युध्द ही है। यह युध्द किस के लिए चलाया जा रहा है? हमारा देश के संसाधनों को लूटने के लिए किया जा रहा है। इसके पूर्व में एक जगह सलवा जुडूम, दूसरी जगह सेन्द्रा, और कहीं किसी दूसरे नाम से प्रति क्रांतिकारी गुटों के माध्यम से तरह–तरह के विनाशकारी व विध्वंसकारी अभियानों को शासक वर्गों ने संचालित किया। इस दौरान आपको ढाल के रूप में इस्तेमाल किया गया। 'सब कुछ नाश करो' वाले इन दमनकारी अभियानों का जनता ने अपनी खून बहाकर आखिरकार उसको हरा दिया। उसके पश्चात ऑपरेशन ग्रीन हंट को सामने लाये। कुल मिलाकर देखने से एक दशाब्दि काल तक अलग–अलग तरीकों से जारी इस जनता पर युध्द में हजार के ऊपर आपके सुरक्षा कर्मियों की भी मौत हो गई। फिर ये शासक वर्ग साल दर साल नये नये तरीके आजमाते हुए सशस्त्र बलों का नवीनीकरण करते हुए युध्द कार्रवाईयों को तेज कर दिया। हजारों करोड़ों रुपयां इस पर खर्च कर रहे हैं। महाराष्ट्र सरकार अकेले गडचिरोली जिले में 2014–15 वित्तीय वर्ष में पुलिस मद पर 290 करोड रुपया खर्च की है। छत्तीसगढ सरकार को देखा जाये तो पिछले 15 सालों में पुलिस बलों की संख्या में तीन गुना बढ़ोत्तरी होकर उसकी संख्या 72 करोड़ हुई। केन्द्रीय बलों पर दर साल 2500 करोड़ रुपयां भुगतान कर रहे है। ये सब वे अपने संघर्ष इलाकों में मौजूद व्यापक संसाधनों को लूटने के लिए कर रहे है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश में माओवादी प्रभावित इलाके रूप में चिन्हित बस्तर का दौरे पर आने वाले हैं। रावघाट रेल लाइन, डिलिमिलि में स्टील प्लांट, किरंदुल में खदानों का विस्तार जैसे पूंजीपतियों के लिए मुनाफा देने वाली कार्यक्रमों में शामिल होने वाले हैं। इसी अवसर पर सलवा जुडुम दो के लिए हरी झंडी दिखा रहे है। यह कोई साधारण बात नहीं है। जीरमघाटि के परिणामों के बारे में भलीभांति वाकिफ आप लोग सल्वाजुडुम व ऑपरेशन ग्रीन हंट का कड़ा विरोध करते हुए आप लोग जनता के पक्ष में खड़े होने की आशा कर रहे हैं। यदि ऐसा नहीं होगा फासीवादी बलों का किस प्रकार अंत होता है, इतिहास इसका गवाह है। इस बात की पुनरावृत्ति भारतीय जन युध्द के दौरान एक बार फिर से होगी।

vHk;

Abhay

iz oDrk

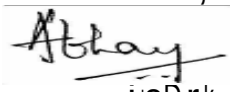

dsUnzh; desfV

ebZ fnol 2015 Hkkjr dh dE;qfuLV ikVhZ ¼ekvksoknh½